# جدول النحو

حقوق الطبع محفوظة

للعبد الفقير

هاشم إسمعى

عفا الله عنه وستر فى الدارين عيوبه

وعن والديه

آمين

طبع على نفقة

شركة بوغكول إتداه

سورابايا

# محتويات الجدول


أ - إعراب الاسم
ب - الفعل والضمير - بناء الفعل
ج - إعراب المضارع
د - علامة الإعراب التقديري
هـ - الفعل والضمير
و - الضمير وتقسيمه
ز - محل الضمير
ح - تلخيص الأحكام
ط - المرفوعات
ي - كان - إنّ - ظنّ وأخواتها
ك - النواصب - الجوازم - حروف الجر
ل - المنصوبات
م - المجرورات - المجرومات
ن - اسم غير منصرف - تقسيم الكلمة


١٨ جمادى الأخيرة ١٤١٣
١٣ نوفمبر ١٩٩٢

هاشم الرسمي

باسم الله والحمد لله

## إعراب الاسم (أ)

العامل في الإعراب: لفظيّ: حضر الأستاذُ | معنويّ: الأستاذُ حضر

| ألقاب الحركات في الإعراب | الرفع | النصب | الجرّ |
|---|---|---|---|
| المعربات بالحركات: الاسم المفرد | ضمة: طالبٌ - الطالبُ | فتحة: طالبًا - الطالبَ | كسرة: طالبٍ - الطالبِ |
| جمع التكسير | ضمة: طُلّابٌ - الطُلّابُ | فتحة: طُلّابًا - الطُلّابَ | كسرة: طُلّابٍ - الطُلّابِ |
| جمع المؤنث السالم | ضمة: طالباتٌ - الطالباتُ | كسرة: طالباتٍ - الطالباتِ | كسرة: طالباتٍ - الطالباتِ |
| اسم لا ينصرف | ضمة: أحمدُ | فتحة: أحمدَ | فتحة: أحمدَ |
| الاسم المقصور | ضمة مقدرة: فتًى - الفتى | فتحة مقدرة: فتًى - الفتى | كسرة مقدرة: فتًى - الفتى |
| الاسم المنقوص | ضمة مقدرة: داعٍ - الداعي | فتحة ظاهرة: داعيًا الداعيَ | كسرة مقدرة: داعٍ - الداعي |
| المعربات بالحروف: الأسماء الخمسة | واو: أبوك | الف: أباك | ياء: أبيك |
| الاسم المثنى | الف: طالبان - الطالبانِ | ياء: طالبين - الطالبينِ | ياء: طالبين - الطالبينِ |
| جمع المذكر السالم | واو: طالبون - الطالبونَ | ياء: طالبين - الطالبينَ | ياء: طالبين - الطالبينَ |

## الفعل والضمير - بناء الفعل (ب)

باسم الله والحمد لله

| | الماضي | ضمائر الرفع | ضمائر النصب | ضمائر الجر | المضارع | الأمر |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الغائب | فَعَلَ | هُوَ | إيّاهُ | بِهِ | يَفْعُلُ | |
| | فَعَلا | هُما ١ | إيّاهُما | بِهِما | يَفْعُلانِ | |
| | فَعَلُوا | هُمْ وا | إيّاهُمْ | بِهِمْ | يَفْعُلُونَ | |
| | فَعَلَتْ | هِيَ | إيّاها | بِها | تَفْعُلُ | |
| | فَعَلَتا | هُما ١ | إيّاهُما | بِهِما | تَفْعُلانِ | |
| | فَعَلْنَ | هُنَّ ن | إيّاهُنَّ | بِهِنَّ | يَفْعُلْنَ ن | |
| المخاطب | فَعَلْتَ | أنْتَ | إيّاكَ | بِكَ | تَفْعُلُ | افْعُلْ |
| | فَعَلْتُما | أنْتُما ١ | إيّاكُما | بِكُما | تَفْعُلانِ | افْعُلا ١ |
| | فَعَلْتُمْ | أنْتُمْ وا | إيّاكُمْ | بِكُمْ | تَفْعُلُونَ | افْعُلُوا وا |
| | فَعَلْتِ | أنْتِ | إيّاكِ | بِكِ | تَفْعُلِينَ | افْعُلِي ي |
| | فَعَلْتُما | أنْتُما ١ | إيّاكُما | بِكُما | تَفْعُلانِ | افْعُلا ١ |
| | فَعَلْتُنَّ | أنْتُنَّ ن | إيّاكُنَّ | بِكُنَّ | تَفْعُلْنَ ن | افْعُلْنَ ن |
| المتكلم | فَعَلْتُ | أنا | إيّايَ | بِي | أفْعَلُ | - |
| | فَعَلْنا | نَحْنُ نا | إيّانا | بِنا | نَفْعَلُ | - |

بناء الفعل الماضي

مبنيّ:
- على الفتحة: فَعَلَ / على الفتحة: فَعَلا
- على الضمة: فَعَلُوا
- على الفتحة: فَعَلَتْ / على الفتحة: فَعَلَتا
- على السكون: فَعَلْنَ / على السكون: فَعَلْتَ / على السكون: فَعَلْتُما / على السكون: فَعَلْتُمْ / على السكون: فَعَلْتِ / على السكون: فَعَلْتُما / على السكون: فَعَلْتُنَّ / على السكون: فَعَلْتُ / على السكون: فَعَلْنا

مبنيّ: فتحةٌ مُقَدَّرةٌ: رَمَى

مبنيّ: على السكون: أفْعُلْ
- على حذف النون: أفْعُلانِ
- على حذف النون: أفْعُلُوا
- على حذف النون: أفْعُلِي
- على حذف النون: أفْعُلانِ
- على السكون: أفْعُلْنَ

على حذف حرف العلة: إسْعَ
على حذف حرف العلة: أدْعُ
على حذف حرف العلة: إرْمِ

## إعراب المضارع (ج)

| | | مرفوع | منصوب | مجزوم |
|---|---|---|---|---|
| ١ | الصحيح الآخر | بالضمة: يَفْعُلُ | بالفتحة: يَفْعُلَ | بالسكون: يَفْعُلْ |
| ٢ | الأفعال الخمسة | بالنون: يَفْعُلانِ | بحذف النون: يَفْعُلا | بحذف النون: يَفْعُلا |
| ٣ | الأفعال الخمسة | بالنون: يَفْعُلُونَ | بحذف النون: يَفْعُلُوا | بحذف النون: يَفْعُلُوا |
| ٤ | الصحيح الآخر | بالضمة: تَفْعُلُ | بالفتحة: تَفْعُلَ | بالسكون: تَفْعُلْ |
| ٥ | الأفعال الخمسة | بالنون: تَفْعُلانِ | بحذف النون: تَفْعُلا | بحذف النون: تَفْعُلا |
| ٦ | | | | |
| ٧ | الصحيح الآخر | بالضمة: تَفْعُلُ | بالفتحة: تَفْعُلَ | بالسكون: تَفْعُلْ |
| ٨ | الأفعال الخمسة | بالنون: تَفْعُلانِ | بحذف النون: تَفْعُلا | بحذف النون: تَفْعُلا |
| ٩ | الأفعال الخمسة | بالنون: تَفْعُلُونَ | بحذف النون: تَفْعُلُوا | بحذف النون: تَفْعُلُوا |
| ١٠ | الأفعال الخمسة | بالنون: تَفْعُلِينَ | بحذف النون: تَفْعُلِي | بحذف النون: تَفْعُلِي |
| ١١ | الأفعال الخمسة | بالنون: تَفْعُلانِ | بحذف النون: تَفْعُلا | بحذف النون: تَفْعُلا |
| ١٢ | | | | |
| ١٣ | الصحيح الآخر | بالضمة: أفْعُلُ | بالفتحة: أفْعُلَ | بالسكون: أفْعُلْ |
| ١٤ | الصحيح الآخر | بالضمة: نَفْعُلُ | بالفتحة: نَفْعُلَ | بالسكون: نَفْعُلْ |
| | المعتل الآخر (ا) | بالضمة المقدرة: يَسْعَى | بالفتحة المقدرة: يَسْعَى | بحذف الألف: يَسْعَ |
| | المعتل الآخر (و) | بالضمة المقدرة: يَدْعُو | بالفتحة الظاهرة: يَدْعُوَ | بحذف الواو: يَدْعُ |
| | المعتل الآخر (ي) | بالضمة المقدرة: يَرْمِي | بالفتحة الظاهرة: يَرْمِيَ | بحذف الياء: يَرْمِ |
| | مبنيّ على الفتح | تَفْعَلْنَ | لَنْ تَفْعَلْنَ | لَمْ تَفْعَلْنَ |
| ٦ | مبني على السكون | يَفْعَلْنَ | لَنْ يَفْعَلْنَ | لَمْ يَفْعَلْنَ |
| ١٢ | مبني على السكون | تَفْعَلْنَ | لَنْ تَفْعَلْنَ | لَمْ تَفْعَلْنَ |

الأفعال الخمسة بالنون: يَفْعُلانِ | لَنْ يَفْعُلا
غير الأفعال الخمسة بالنون: يَفْعُلُ | لَنْ يَفْعُلَ

## عَلَامَةُ الْإِعْرَابِ التَّقْدِيرِيِّ

د

باسم الله والحمد لله

| الْأَسْمَاءُ الْمُعْرَفَةُ | عَلَامَةُ الرَّفْعِ | عَلَامَةُ النَّصْبِ | عَلَامَةُ الْجَرِّ | الْأَسْبَابُ |
|---|---|---|---|---|
| ١. الْمَقْصُورُ النَّكِرَةُ | جَاءَ فَتًى<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | رَأَيْتُ فَتًى<br>• فَتْحَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | مَرَرْتُ بِفَتًى<br>• كَسْرَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | لِلتَّعَذُّرِ |
| ٢. الْمَقْصُورُ الْمَعْرِفَةُ | جَاءَ الْفَتَى<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | رَأَيْتُ الْفَتَى<br>• فَتْحَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | مَرَرْتُ بِالْفَتَى<br>• كَسْرَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | لِلتَّعَذُّرِ |
| ٣. الْمَنْقُوصُ النَّكِرَةُ | جَاءَ قَاضٍ<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | | مَرَرْتُ بِقَاضٍ<br>• كَسْرَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | لِلثِّقَلِ |
| ٤. الْمَنْقُوصُ الْمَعْرِفَةُ | جَاءَ الْقَاضِي<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | | مَرَرْتُ بِالْقَاضِي<br>• كَسْرَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | لِلثِّقَلِ |
| ٥. الْمُضَافُ إِلَى يَاءِ الْمُتَكَلِّمِ | جَاءَنِي غُلَامِي<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | رَأَيْتُ غُلَامِي<br>• فَتْحَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | | لِاشْتِغَالِ الْمَحَلِّ بِالْحَرَكَةِ الْمُنَاسِبَةِ |
| ٦. جَمْعُ الْمُذَكَّرِ السَّالِمُ مَعَ يَاءِ الْمُتَكَلِّمِ | هَؤُلَاءِ مُسْلِمُونَ (هَذَانِ مُسْلِمَانِ)<br>• وَاوٌ فِي آخِرِ الْكَلِمَةِ | | | عَلَامَةُ رَفْعِهِ الْوَاوُ الْمَقْلُوبَةُ يَاءً لِأَجْلِ دُغَامِ |

• الْمُضَافُ إِلَى يَاءِ الْمُتَكَلِّمِ، جَاءَ قَاضِيَّ - تُقَدَّرُ عَلَى الْيَاءِ الْمُدْغَمَةِ فِيهَا، الرَّفْعُ وَالْجَرُّ لِلثِّقَلِ - وَالنَّصْبُ لِاشْتِغَالِ الْمَحَلِّ بِالْحَرَكَةِ الْمُنَاسِبَةِ (الْفَتْحِ)

| الْأَفْعَالُ الْمُعْرَبَةُ | عَلَامَةُ الرَّفْعِ | عَلَامَةُ النَّصْبِ | عَلَامَةُ الْجَرِّ | الْأَسْبَابُ |
|---|---|---|---|---|
| ١. الْمَخْتُومُ بِأَلِفٍ | يَخْشَى<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | لَنْ يَخْشَى<br>• فَتْحَةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْأَلِفِ | | لِلتَّعَذُّرِ |
| ٢. الْمَخْتُومُ بِوَاوٍ | يَدْعُو<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْوَاوِ | | | لِلثِّقَلِ |
| ٣. الْمَخْتُومُ بِيَاءٍ | يَرْمِي<br>• ضَمَّةٌ مُقَدَّرَةٌ عَلَى الْيَاءِ | | | لِلثِّقَلِ |
| ٤. بَعْدَهُ سَاكِنٌ | | لَا تَنْصُرَانِ الْمُخَادِنَ<br>• مَبْنِيٌّ عَلَى الرَّاءِ | مِنْ عَدُوِّهِمْ<br>• مَبْنِيٌّ عَلَى السُّكُونِ | لِالْتِقَاءِ السَّاكِنَيْنِ |
| ٥. بَعْدَهُ نُونُ التَّوْكِيدِ | هَلْ تَكْتُبَانِّ<br>• نُونُ قَبْلَ النُّونِ | | | لِلثِّقَلِ<br>أَصْلُهُ: تَكْتُبَانِ نَّ |
| ٦. بَعْدَهُ نُونُ الْوِقَايَةِ | هَلْ تَنْصُرُونِي<br>• نُونُ قَبْلَ النُّونِ | | | لِلثِّقَلِ<br>أَصْلُهُ: تَنْصُرُونَنِي |

## الْفِعْلُ وَالضَّمِيرُ

هـ

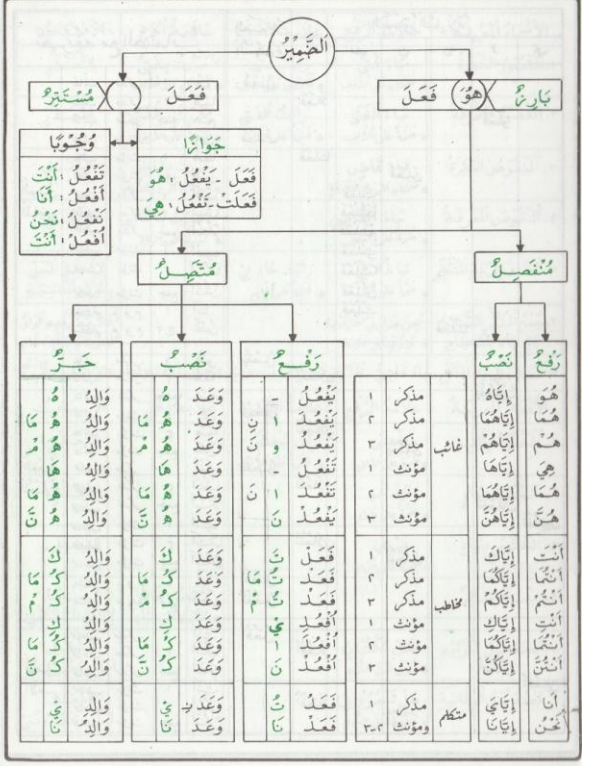
باسم الله والحمد لله

| تَصْرِيفُهُ مَعَ الضَّمَائِرِ | | | | الضَّمَائِرُ الْمُسْتَتِرَةُ | الضَّمَائِرُ الْبَارِزَةُ | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | غائب | مذكر | ١ | فَعَلَ | ١ | ت | ن | ا | و | ي |
| الْفِعْلُ الْمَاضِي | غائب | مذكر | ٢ | فَعَلَا | | | | | | |
| | غائب | مذكر | جمع ١ | فَعَلَتْ | | | | | | |
| | غائب | مؤنث | ٢ | | | | | | | |
| | غائب | مؤنث | جمع ١ | | | | | | | |
| | غائب | مؤنث | جمع ٢ | | | | | | | |
| | مخاطب | مذكر | ٢ | | | فَعَلْتَ | | | | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ١ | | | فَعَلْتُمَا | | | | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ٢ | | | فَعَلْتُمْ | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | ٢ | | | فَعَلْتِ | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ١ | | | فَعَلْتُمَا | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ٢ | | | فَعَلْتُنَّ | | | | |
| | متكلم | م و م | ١ | | | فَعَلْتُ | | | | |
| | متكلم | م و م | ج ١ | | | | فَعَلْنَا | | | |
| | غائب | مذكر | ١ | يَفْعَلُ | | | | | | |
| | غائب | مذكر | ٢ | | يَفْعَلَانِ | | | | | |
| | غائب | مذكر | جمع ١ | | | | | | يَفْعَلُونَ | |
| | غائب | مؤنث | ١ | تَفْعَلُ | | | | | | |
| | غائب | مؤنث | ٢ | | تَفْعَلَانِ | | | | | |
| | غائب | مؤنث | جمع ١ | | | | يَفْعَلْنَ | | | |
| الْفِعْلُ الْمُضَارِعُ | مخاطب | مذكر | ٢ | | | | | | | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ١ | | | | | | تَفْعَلُونَ | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ٢ | | | | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | ٢ | | تَفْعَلَانِ | | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ١ | | | | تَفْعَلْنَ | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ٢ | | | | | | | |
| | متكلم | م و م | ١ | أَفْعَلُ | | | | | | |
| | متكلم | م و م | ج ١ | نَفْعَلُ | | | | | | تَفْعَلِينَ |
| | مخاطب | مذكر | ٢ | | | | | | | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ١ | | | | | | | |
| | مخاطب | مذكر | جمع ٢ | | | | | | | |
| فِعْلُ الْأَمْرِ | مخاطب | مؤنث | ٢ | | | | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ١ | | | | | | | |
| | مخاطب | مؤنث | جمع ٢ | | | | | | | |

## الضَّمِيرُ وَتَقْسِيمُهُ

و

باسم الله والحمد لله




## مَحَلُّ الضَّمِيرِ

ز

باسم الله والحمد لله



## تَلْخِيصُ الأَحْكَامِ

ح

بِاسْمِ اللهِ وَالحَمْدُ للهِ

### الاِسْمُ

- **مَرْفُوعٌ**
  - الْمُبْتَدَأُ
  - الْخَبَرُ
    - الْمُبْتَدَأُ الْمَحْذُوفُ (أَوِ الْخَبَرُ)
  - الْمَرَافِيعُ
    - اِسْمُ كَانَ
    - اِسْمُ كَادَ
    - اِسْمُ مَا
    - خَبَرُ إِنَّ
    - خَبَرُ لَا
- **مَنْصُوبٌ**
  - الْمَنَاصِيبُ
    - خَبَرُ كَانَ
    - خَبَرُ مَا
    - اِسْمُ إِنَّ
    - اِسْمُ لَا
  - الْمَفَاعِيلُ
    - مَفْعُولٌ بِهِ
    - مَفْعُولٌ مُطْلَقٌ
    - مَفْعُولٌ لِأَجْلِهِ
    - مَفْعُولٌ فِيهِ
    - مَفْعُولٌ مَعَهُ
  - الْأَفَاعِيلُ
    - حَالٌ
    - تَمْيِيزٌ
    - مُسْتَثْنًى
- **مَجْرُورٌ**
  - بِحَرْفِ الْجَرِّ
  - بِالْإِضَافَةِ
    - مَجْرُورُ
    - مُضَافٌ إِلَيْهِ
- **تَابِعٌ**
  - نَعْتٌ
  - عَطْفٌ
  - تَوْكِيدٌ
  - بَدَلٌ

### الفِعْلُ

- **مَاضٍ** — مَبْنِيٌّ — عَلَى الْفَتْحِ / عَلَى الضَّمِّ / عَلَى السُّكُونِ
- **مُضَارِعٌ**
  - مَرْفُوعٌ — بِالضَّمِّ / بِثُبُوتِ النُّونِ
  - مَنْصُوبٌ — بِالْفَتْحِ / بِحَذْفِ النُّونِ
  - مَجْزُومٌ — بِالسُّكُونِ / بِحَذْفِ النُّونِ / بِحَذْفِ حَرْفِ الْعِلَّةِ
  - مَبْنِيٌّ — عَلَى السُّكُونِ / عَلَى الْفَتْحِ
- **أَمْرٌ** — مَبْنِيٌّ — عَلَى السُّكُونِ / عَلَى حَذْفِ النُّونِ / عَلَى حَذْفِ حَرْفِ الْعِلَّةِ / عَلَى الْفَتْحِ

فِعْلٌ لَهُ مَحَلٌّ

### الحَرْفُ

- **عَامِلٌ**
  - حُرُوفُ الْجَرِّ
  - حُرُوفُ النَّسْخِ
  - حُرُوفُ النِّدَاءِ
  - حُرُوفُ الِاسْتِثْنَاءِ
  - حُرُوفُ الْجَرِّ
  - حُرُوفُ النَّصْبِ وَالنَّصْبِ الْفَرْعِيِّ
  - حُرُوفُ الْعَطْفِ
- **عَاطِلٌ** — حُرُوفُ الْمَعَانِي

## الْمَرْفُوعَاتُ

ط

بِاسْمِ اللهِ وَالحَمْدُ للهِ

| الْمَرْفُوعَاتُ | أَقْسَامُهَا | الْأَمْثِلَةُ |
|---|---|---|
| • فَاعِلٌ | • اِسْمٌ ظَاهِرٌ<br>• اِسْمٌ ضَمِيرٌ | قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ<br>تَوَكَّلْنَا عَلَى اللهِ |
| • نَائِبُ فَاعِلٍ | • اِسْمٌ ظَاهِرٌ<br>• اِسْمٌ ضَمِيرٌ | وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا<br>عُلِّمْتُ الْخَيْرَ صَحِيحًا |
| • مُبْتَدَأٌ | لَهُ خَبَرٌ<br>لَهُ مَرْفُوعٌ سَدَّ مَسَدَّ الْخَبَرِ | اللهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ<br>هَلْ مُجْتَهِدٌ زُهَيْرٌ فِي الْمَدْرَسَةِ |
| • خَبَرٌ — مُفْرَدٌ | • اِسْمٌ جَامِدٌ<br>• اِسْمٌ مُشْتَقٌّ | الصَّمْتُ زَيْنٌ وَالسُّكُوتُ سَلَامَةٌ<br>الْعِلْمُ نَافِعٌ وَالْجَهْلُ ضَارٌّ |
| • خَبَرٌ — غَيْرُ مُفْرَدٍ | • جُمْلَةٌ فِعْلِيَّةٌ<br>• جُمْلَةٌ اِسْمِيَّةٌ | الْخُلُقُ الْحَسَنُ يُعْلِي قَدْرَ صَاحِبِهِ<br>الْمُسْلِمُ خُلُقُهُ حَسَنٌ |
| | • ظَرْفٌ<br>• جَارٌّ وَمَجْرُورٌ | الْجَنَّةُ تَحْتَ أَقْدَامِ الْأُمَّهَاتِ<br>الْعِلْمُ فِي الصُّدُورِ وَلَا فِي السُّطُورِ |
| • اِسْمُ كَانَ وَأَخَوَاتِهَا | • اِسْمٌ ظَاهِرٌ<br>• اِسْمٌ ضَمِيرٌ | كَانَ اللهُ عَلِيمًا حَكِيمًا<br>كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ |
| • اِسْمُ أَفْعَالِ الْمُقَارَبَةِ | • اِسْمٌ ظَاهِرٌ<br>• اِسْمٌ ضَمِيرٌ | يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ<br>لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا |
| • اِسْمُ لَا الَّتِي لِنَفْيِ الْوَحْدَةِ | • اِسْمٌ نَكِرَةٌ | لَا رَجُلٌ حَاضِرًا |
| • اِسْمُ مَا/إِنْ تَحْمِلُ عَمَلَ لَيْسَ | • اِسْمٌ نَكِرَةٌ<br>• اِسْمٌ مَعْرِفَةٌ | مَا مُؤْمِنٌ عَاصِيًا - إِنْ مُؤْمِنٌ كَذُوبًا<br>مَا هَذَا بَشَرًا - إِنْ إِبْرَاهِيمُ خَائِنًا |
| • خَبَرُ إِنَّ وَأَخَوَاتِهَا | | إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ |
| • خَبَرُ لَا الَّتِي لِنَفْيِ الْجِنْسِ | | لَا أَحَدَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ |
| التَّوَابِعُ — نَعْتٌ | • حَقِيقِيٌّ<br>• سَبَبِيٌّ | قَدِمَ الرَّجُلُ الْعَاقِلُ<br>قَدِمَ الرَّجُلُ الْعَاقِلُ أَبُوهُ |
| عَطْفٌ | • بَيَانٌ<br>• نَسَقٌ | حَضَرَ صَاحِبُكَ زَيْدٌ<br>حَضَرَ خَالِدٌ وَزُهَيْرٌ |
| تَوْكِيدٌ لِلْمَرْفُوعِ | • لَفْظِيٌّ<br>• مَعْنَوِيٌّ | جَاءَ سَمِيرٌ سَمِيرٌ<br>جَاءَ الْأَسَاتِيذُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ |
| • بَدَلٌ | • كُلٌّ مِنْ كُلٍّ / مُطَابِقٌ<br>• بَعْضٌ مِنْ كُلٍّ<br>• اِشْتِمَالٌ<br>• مُبَايِنٌ | حَضَرَ خَلِيلٌ صَدِيقُكَ<br>حَضَرَتِ الْفَصِيلَةُ ثُلُثَهَا<br>أَعْجَبَنِي خَلِيلٌ خُلُقُهُ<br>حَضَرَ الْمُعَلِّمُ التِّلْمِيذُ |

## كَانَ - إِنَّ - ظَنَّ وَأَخَوَاتُهَا

ى

بِاسْمِ اللهِ وَالحَمْدُ للهِ

| | الْأَمْثِلَةُ | رَفْعُ الِاسْمِ وَنَصْبُ الْخَبَرِ | الْأَمْثِلَةُ | نَصْبُ الِاسْمِ وَرَفْعُ الْخَبَرِ |
|---|---|---|---|---|
| كَانَ وَأَخَوَاتُهَا | • كَانَ اللهُ عَلِيمًا<br>• أَمْسَى الْوَظَفُ مَسْرُورًا<br>• أَصْبَحَ فَاسْتَحْكَمَ بِهِمْ بَغْيُ إِخْوَانِهِمْ<br>• أَضْحَى الرَّبِيعُ مُعْتَلِيًا<br>• ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا<br>• بَاتَ بَابُ النَّفْيِ سَاهِرًا<br>• صَارَ التِّبْرُ رَخِيصًا<br>• لَيْسَ الْمَوْءُودُ مُنَافِقًا<br>• مَا انْفَكَّ الْمُجْتَهِدُ مُطَالِعًا<br>• مَا فَتِئَ سَمِيرٌ مُنْشَغِلًا<br>• مَا بَرِحَ مُحَمَّدٌ مُتَعَبِّدًا<br>• مَا زَالَ الْأُسْتَاذُ مُدَرِّسًا<br>• مَا دَامَ لَا أَجِيبُكَ مَا دُمْتَ مُتَرَيِّثًا | إِنَّ وَأَخَوَاتُهَا | • إِنَّ اللهَ رَحِيمٌ<br>• أَيْ لَعَلِّي أَنَا نَاجِحٌ<br>• كَأَنَّ الْعِلْمَ نُورٌ<br>• لَكِنَّ خَلِيلًا عَالِمٌ لَكِنَّهُ بَخِيلٌ<br>• لَيْتَ الشَّبَابَ يَعُودُ<br>• لَعَلَّ الْحَبِيبَ قَادِمٌ |
| | | ظَنَّ وَأَخَوَاتُهَا | الْأَمْثِلَةُ | نَصْبُ الْمُبْتَدَأِ وَالْخَبَرِ |
| | | أَفْعَالُ الْقُلُوبِ | • ظَنَنْتُ بَكْرًا قَادِمًا<br>• حَسِبْتُ الثَّوْرَ وَالْحُمُورَ خَيْرَ مُجَارَةٍ<br>• خَالَ خَالِدًا عَالِمًا<br>• زَعَمَ زَعَمْتُنِي شَيْخًا وَلَسْتُ بِشَيْخٍ<br>• رَأَى رَأَيْتُ اللهَ أَكْبَرَ كُلِّ شَيْءٍ<br>• عَلِمَ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ<br>• وَجَدَ وَجَدْتُ الْعِلْمَ نَافِعًا<br>• أَلْفَى أَلْفَيْتُ فَوْقَكَ صَوَابًا<br>• دَرَى دَرَيْتُ عَلِيًّا مَاهِرًا<br>• جَعَلَ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ عِبَادُ الرَّحْمٰنِ إِنَاثًا<br>• عَدَّ لَقَدْ عَدُّوا الْمَوْتَ شَرًّا بِكُلِّ فِي الْوَرَى<br>• حَجَا قَدْ كُنْتُ أَحْجُو أَنْ عَفْوًا أَنَا ثِقَةٌ<br>• هَبْ فَهَبْنِي امْرَأً هَالِكًا<br>• تَعَلَّمْ تَعَلَّمْ شِفَاءَ النَّفْسِ فَهْوَ عَدُوُّهَا | |
| | | أَفْعَالُ الْقُلُوبِ وَأَخَوَاتُهَا | • صَيَّرَ صَيَّرْتُ الْعَدُوَّ صَدِيقًا<br>• اِتَّخَذَ وَاتَّخَذَ اللهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا<br>• تَخِذَ تَخِذْتُ أُسْتَاذًا | |
| | | أَفْعَالُ التَّصْيِيرِ | • جَعَلَ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا<br>• وَهَبَ وَهَبَنِي اللهُ فِدَاءَ الْمُخْلِصِينَ<br>• رَدَّ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا<br>• تَرَكَ تَرَكَ التِّلْمِيذُ أُسْتَاذَهُ مُرَبِّيًا | |

## النَّوَاصِبُ - الْجَوَازِمُ - حُرُوفُ الْجَرِّ

ك

بِاسْمِ اللهِ وَالحَمْدُ للهِ

| النَّوَاصِبُ | الْأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| • أَنْ | أَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَكُمْ |
| • لَنْ | لَنْ يَمُوتَ الْعَاصِي |
| • كَيْ | إِقْرَأْ كَيْ تَحْفَظَ - أَوْلِكَيْ تَحْفَظَ |
| • إِذَنْ | إِذَنْ تَنْجَحَ جَوَابًا لِمَنْ قَالَ سَأَجْتَهِدُ |
| • لِ التَّعْلِيلِ | خُذِ الدَّوَاءَ لِتَبْرَأَ |
| • لِ الْجُحُودِ | مَا كَانَ اللهُ لِيَظْلِمَ النَّاسَ |
| • حَتَّى | صُمْ حَتَّى تَغِيبَ الشَّمْسُ |
| • أَوْ | سَأَجْتَهِدُ أَوْ أَنَالَ الْمَجْدَ |
| • أَوْ | لَأَعْمَلَنَّ أَوْ تُعْطِنِي حَقِّي |
| • وَ الْمَعِيَّةِ | لَا تَأْمُرْ بِالْخَيْرِ وَتُخَالِفَ عَنْهُ |
| • وَ الْعَطْفِ | لَا تَأْمُرْ بِالْخَيْرِ وَلَا تُخَالِفَ عَنْهُ |
| • فِ السَّبَبِيَّةِ | هَلْ تَرْحَمُنِي فَأَرْحَمَكَ |
| • فِ الْعَطْفِ | لَا أَكْسَلُ فَأَرْسُبَ |

| حُرُوفُ الْجَرِّ | الْأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| • مِنْ | هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ |
| • إِلَى | مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللهِ - رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ |
| • عَنْ | وَلَا يَصُدُّونَ عَنْ ذِكْرِ اللهِ - رَضِيَ اللهُ عَنْهُ |
| • عَلَى | وَآتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ |
| • فِي | الَّذِينَ كَفَرُوا فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا |
| • بِ | اِعْبُدِ اللهَ بِالْإِخْلَاصِ - فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا |
| • لِ | إِنَّا لِلهِ لَهُ الْمَحْمَدُ وَلَهُ الشُّكْرُ |

| الْجَوَازِمُ | الْأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| • لَمْ | لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ |
| • لَمَّا | لَمَّا أَسَافِرْ |
| • أَلَمْ | أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللهَ يَرَى |
| • أَلَمَّا | أَلَمَّا تَذْكُرْ بِنِعْمَةِ اللهِ عَلَيْكَ |
| • لَا النَّاهِيَةُ | لَا تَكْسَلْ فَتَنْدَمَ |
| • لِ الْأَمْرِ | فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي |
| • جَوَابُ الطَّلَبِ | أَطِعْ أُسْتَاذَكَ يُبَارِكِ اللهُ فِيكَ اللهَ |
| • إِنْ | إِنْ تَكْسَلْ تَنْدَمْ |
| • مَنْ | مَنْ يَزُرْنِي أُكْرِمْهُ |
| • مَا | وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللهُ |
| • أَيْنَمَا | أَيْنَمَا تَجْلِسْ تَجِدْ مُحَمَّدًا |
| • أَيُّ | أَيَّ تُكْرِمْ أُكْرِمْ |
| • مَتَى | مَتَى تَتَوَاضَعْ يَرْفَعِ اللهُ جَاهَكَ |
| • أَنَّى | أَنَّى يَنْزِلْ ذُو الْعِلْمِ يُكْرَمْ |
| • أَيَّانَ | أَيَّانَ تَتَصَدَّقْ تُصَدَّقْ |
| فِعْلُ الشَّرْطِ وَالثَّانِي جَوَابُهُ | مَهْمَا مَا تَأْمُرْنِي بِهِ أَفْعَلْهُ<br>إِذْمَا إِذْمَا تَتَصَدَّقْ تُسَلْ<br>حَيْثُمَا حَيْثُمَا تَتَّقِ اللهَ تَجِدْ لَكَ اللهَ مُحَامِيًا<br>كَيْفَمَا كَيْفَمَا تَكُنْ بَكْرٌ قَرِيبَكَ<br>إِذَا فِي الشِّعْرِ وَإِذَا تُخْصَّ خَصَائِصُ تَحْتَمِلْ |

| حُرُوفُ الْجَرِّ | الْأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| تَجُرُّ الِاسْمَ الظَّاهِرَ | • كَ<br>• حَتَّى<br>• وَ الْقَسَمِ<br>• تَ الْقَسَمِ<br>• رُبَّ<br>• مُذْ<br>• مُنْذُ |
| | لَيْسَ كَعَلِيٍّ شَخْصٌ<br>سِرْتُ هَذَا النَّهَارَ حَتَّى الْعَصْرِ<br>وَالْفَجْرِ وَلَيَالٍ عَشْرٍ<br>تَاللهِ لَأُكْرِمَنَّ أُسْتَاذِي<br>رُبَّ قَلَمٍ لِلْقُرْآنِ وَالْقُرْآنُ يَعْلَمُهُ<br>مَا رَأَيْتُكَ مُذْ يَوْمِ الْأَحَدِ<br>جَلَسْتُ فِي الْفَصْلِ مُنْذُ السَّبَاحِ |

## المَنْصُوبَاتُ

باسم الله والحمد لله

ل

| المَنْصُوبَاتُ | أَقْسَامُهَا | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|---|
| • مَفْعُولٌ بِهِ | • اِسْمٌ ظَاهِرٌ<br>• اِسْمُ ضَمِيرٍ | ، قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا<br>، أَلَمْ أَنْهَكَ / إِيَّاكَ أَنْهَيْتُ |
| • مَفْعُولٌ مُطْلَقٌ | • تَأْكِيدُ لَفْظِهِ<br>• بَيَانُ العَدَدِ<br>• بَيَانُ النَّوْعِ | ، وَكَلَّمَ اللهُ مُوسَى تَكْلِيمًا<br>، ضَرَبْتُ اليَتِيمَ ضَرْبَتَيْنِ<br>، سِرْتُ سَيْرَ العُلَمَاءِ |
| • مَفْعُولٌ فِيهِ / ظَرْفٌ | • ظَرْفُ مَكَانٍ<br>• ظَرْفُ زَمَانٍ | ، يَحْضُرُ الأُسْتَاذُ الدَّرْسَ أَمَامَ التَّلَامِيذِ<br>، أَرَاكَ يَوْمَ الجُمُعَةِ مَسَاءً |
| • مَفْعُولٌ لَهُ | | ، يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاةِ اللهِ |
| • مَفْعُولٌ مَعَهُ | | ، مَشَيْتُ وَالنَّهْرَ |
| • شِبْهُ بِالمَفْعُولِ | • اِسْمٌ مُشْتَقٌّ<br>• فِي كَلَامٍ تَامٍّ مُثْبَتٍ | ، خَالِدٌ حَسَنٌ خُلُقُهُ<br>، يَا أَيُّهَا المُزَّمِّلُ قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا |
| • مُسْتَثْنَى | | ، وَلَا تَمْشِ فِي الأَرْضِ مَرَحًا |
| • حَالٌ | • مُفْرَدٌ<br>• جُمْلَةٌ | ، لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى |
| • تَمْيِيزٌ | • ذَاتٌ / مُفْرَدٌ<br>• نِسْبَةٌ | ، جَاءَ أَحَدَ عَشَرَ تِلْمِيذًا<br>، وَفَجَّرْنَا الأَرْضَ عُيُونًا |
| • خَبَرُ كَانَ وَأَخَوَاتِهَا | | ، قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا |
| • خَبَرُ لَا الَّتِي لِنَفْيِ الوَحْدَةِ | • اِسْمٌ نَكِرَةٌ | ، لَا تِلْمِيذَةَ حَاضِرَةٌ |
| • خَبَرُ مَا وَلَا وَإِنِ الحِجَازِيَّةِ | | ، مَا هَذَا بَشَرًا - إِنْ مُؤْمِنٌ كَذَّبُوا |
| • خَبَرُ أَفْعَالِ المُقَارَبَةِ | • فِعْلٌ مُضَارِعٌ | ، قَدْ يَكَادُ وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ |
| • اِسْمُ إِنَّ وَأَخَوَاتِهَا | | ، إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ |
| • اِسْمُ لَا الَّتِي لِنَفْيِ الجِنْسِ | | ، لَا تَهْوِيلَ مَمْدُوحٌ |
| • المُنَادَى | | ، الكَذِبَ أَخِي يَا عَبْدَ الكَذِبِ |
| • الإِغْرَاءُ | | الصِّدْقَ أَيُّ الزَّمِ الصِّدْقَ |
| • الاِخْتِصَاصُ | | ، نَحْنُ العَرَبَ أَيْ أَخُصُّ العَرَبَ |
| • الاِشْتِغَالُ | | ، زَيْدًا أَكْرَمْتُهُ أَيْ أَكْرَمْتُ زَيْدًا أَكْرَمْتُهُ |
| • التَّشْرِيعُ | | ، "تُؤْخَذُ أَوْ عَلَيْهِ فِطْرًا ، وَأَخْرَى فِطْرًا أَرْضَعَهُ عَلَيْهِ" |
| التَّوَابِعُ لِلْمَنْصُوبَاتِ • نَعْتٌ | • حَقِيقِيٌّ<br>• سَبَبِيٌّ | ، أَكْرَمْتُ الرَّجُلَ الكَرِيمَ<br>، أَكْرَمْتُ الرَّجُلَ الكَرِيمَةَ أُمُّهُ |
| • عَطْفٌ | • بَيَانٌ<br>• نَسَقٌ | ، اِشْتَرَيْتُ خَاتَمًا سِوَارًا<br>، اِشْتَرَيْتُ الكِتَابَ وَ القَلَمَ |
| • تَوْكِيدٌ | • لَفْظِيٌّ<br>• مَعْنَوِيٌّ | ، اِتَّقُوا اللهَ اللهَ<br>، رَأَيْتُ زَيْدًا نَفْسَهُ وَالقَوْمَ كُلَّهُمْ أَجْمَعِينَ |
| • بَدَلٌ | • كُلٌّ مِنْ كُلٍّ / مُطَابِقٌ<br>• بَعْضٌ مِنْ كُلٍّ<br>• اِشْتِمَالٌ<br>• مُبَايِنٌ | ، اِهْدِنَا الصِّرَاطَ المُسْتَقِيمَ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ<br>، أَكَلْتُ الخُبْزَ رَغِيفَهُ<br>، أَعْجَبَنِي خَالِدٌ أَدَبُهُ<br>، أَطِعِ التِّلْمِيذُ الأُسْتَاذَ |

## المَجْرُورَاتُ - المَجْرُومَاتُ

باسم الله والحمد لله

م

| المَجْرُورَاتُ | أَقْسَامُهَا | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|---|
| • بِحَرْفِ الجَرِّ | • جَرُّ الاِسْمِ الظَّاهِرِ وَالمُضْمَرِ<br>• جَرُّ الاِسْمِ الظَّاهِرِ | ، آمَنْتُ بِاللهِ / آمَنْتُ بِهِ<br>، سَهِرْتُ حَتَّى الصَّبَاحِ |
| • بِالإِضَافَةِ | • مَعْنَوِيَّةٌ<br>• لَفْظِيَّةٌ | ، خَيْرُ الأُمُورِ أَوْسَطُهَا<br>، أُحِبُّ قَارِئَ القُرْآنِ |
| • بِالتَّبَعِيَّةِ • نَعْتٌ | • حَقِيقِيٌّ<br>• سَبَبِيٌّ | ، أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ العَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ<br>، دَخَلْتُ فِي البَيْتِ الوَاسِعِ بَابُهُ |
| • عَطْفٌ | • بَيَانٌ<br>• نَسَقٌ | ، ذَهَبْتُ بِصَاحِبِكَ خَالِدٍ<br>، أَدْرُسُ كِتَابَ اللُّغَةِ وَالفِقْهِ |
| • تَوْكِيدٌ | • لَفْظِيٌّ<br>• مَعْنَوِيٌّ | ، آمِنُوا بِآيَاتِ اللهِ اللهِ<br>، صَلَّيْتُ مَعَ الإِمَامِ نَفْسِهِ |
| • بَدَلٌ | • كُلٌّ مِنْ كُلٍّ / مُطَابِقٌ<br>• بَعْضٌ مِنْ كُلٍّ<br>• اِشْتِمَالٌ<br>• مُبَايِنٌ | ، إِلَى صِرَاطِ العَزِيزِ الحَمِيدِ اللهِ<br>، أَحْفَظُ جَمِيعَ دُرُوسِكَ الصَّرْفِ<br>، أُعْجِبْتُ بِزَيْدٍ عِلْمِهِ<br>، اِذْهَبْ مَعَ زُهَيْرٍ بَكْرٍ |

| المَجْرُومَاتُ | أَقْسَامُهَا | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|---|
| • الجَوَازِمُ | • يَجْزِمُ فِعْلًا وَاحِدًا<br>• يَجْزِمُ فِعْلَيْنِ مُضَارِعَيْنِ | ، لَا تَيْأَسْ مِنْ رَحْمَةِ اللهِ<br>، مَنْ يَفْعَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ |
| • بِالتَّبَعِيَّةِ • عَطْفٌ | • نَسَقٌ<br>• تَوْكِيدٌ لَفْظِيٌّ | ، إِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللهُ<br>، إِنْ تَكْسَلْ تَكْسَلْ تَنْدَمْ |
| • بَدَلٌ | • كُلٌّ مِنْ كُلٍّ / مُطَابِقٌ<br>• بَعْضٌ مِنْ كُلٍّ<br>• اِشْتِمَالٌ<br>• مُبَايِنٌ | ، وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ آثَامًا يُضَاعَفْ ...<br>، إِنْ تُصَلِّ تَسْجُدْ لِلَّهِ يَرْحَمْكَ<br>، مَنْ يَصِلْ إِلَيْنَا يَسْتَغْنِ بِنَا يَغْنَ<br>، إِنْ تَأْتِنَا تَسْأَلْنَا نُعْطِكَ |

## اِسْمٌ غَيْرُ مُنْصَرِفٍ - تَقْسِيمُ الكَلِمَةِ

باسم الله والحمد لله

ن

| العِلَّتَانِ الفَرْعِيَّتَانِ مِنَ العِلَلِ التِّسْعِ | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| • العَلَمُ • وَزْنُ الفِعْلِ<br>• التَّأْنِيثُ لَفْظًا أَوْ مَعْنًى<br>• التَّرْكِيبُ المَزْجِيُّ غَيْرُ مَخْتُومٍ بِوَيْهِ<br>• زِيَادَةُ الأَلِفِ وَالنُّونِ<br>• العَدْلُ<br>• العُجْمَةُ الزَّائِدَةُ عَلَى ثَلَاثَةِ أَحْرُفٍ | ، يَهْدِي أُسْتَاذُ صُبُورٌ وَأُسْعِدُ تِلْمِيذٌ مُجْتَهِدٌ<br>، أُحْسِنُ إِلَى حَمْزَةَ وَمَرْيَمَ<br>، رَأَيْتُ مَعْدِيكَرِبَ فِي حَضْرَمَوْتَ<br>، ذَهَبَ دَحْلَانُ إِلَى بَيْتِ عِمْرَانَ<br>، رَجَعَ زُفَرُ مِنْ بَيْتِ عُمَرَ<br>، إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ رَسُولُ اللهِ |
| • الوَصْفُ • وَزْنُ فَعَلَانَ مُؤَنَّثُهُ فَعْلَى<br>• وَزْنُ أَفْعَلَ مُؤَنَّثُهُ فَعْلَاءُ<br>• العَدْلُ | ، لَا تَقْرَبْ مِنْ رَجُلٍ سَكْرَانَ<br>، خُذِ القَلَمَ مِنْ صُنْدُوقِ أَحْمَرَ<br>، دَخَلَ القَوْمُ أَحَادَ وَمَثْنَى مُحَمَّسَ |

| العِلَّةُ الوَاحِدَةُ الفَرْعِيَّةُ الَّتِي تَقُومُ مَقَامَ العِلَّتَيْنِ | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|
| • صِيغَةُ مُنْتَهَى الجُمُوعِ<br>• أَلِفُ التَّأْنِيثِ المَمْدُودَةُ<br>• أَلِفُ التَّأْنِيثِ المَقْصُورَةُ | ، فِي إِنْدُونِيسِيَا مَسَاجِدُ كَثِيرَةٌ<br>، اُكْتُبْ صُورَةً بَيْضَاءَ فِي سَبُّورَةٍ سَوْدَاءَ<br>، أَحْسَنْتَ سُعْدَى إِلَى سَلْمَى |

| الكَلِمَاتُ الثَّلَاثُ | | الأَمْثِلَةُ |
|---|---|---|
| • الاِسْمُ | • اِسْمٌ نَكِرَةٌ | ، تِلْمِيذٌ مُؤَدَّبٌ خَيْرٌ مِنْ تِلْمِيذٍ وَغَيْرِهِ |
| | اِسْمٌ مَعْرِفَةٌ • الضَّمِيرُ | ، أَنْتَ أَكْرَمْتَنِي |
| | • العَلَمُ | ، مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ |
| | • اِسْمُ الإِشَارَةِ | ، وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ ... |
| | • الاِسْمُ المَوْصُولُ | ، الَّذِينَ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ المَلَائِكَةُ ... |
| | • الاِسْمُ المُقْتَرِنُ بِـ (أَلْ) | ، العَمَلُ وِشْيُ الحَمِيدِ |
| | • المُضَافُ إِلَى مَعْرِفَةٍ | ، قَاعِدَةُ الاِجْتِمَاعِ أَكْبَرُ مِنْ بَيْتِ بَكْرٍ |
| | • المُنَادَى المَقْصُودُ بِالنِّدَاءِ | ، يَا طَيِّبُ إِفْحَصْ |
| • الفِعْلُ | • المَاضِي<br>• المُضَارِعُ<br>• الأَمْرُ | ، قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّى<br>، أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ ...<br>، أَقِمِ الصَّلَاةَ وَأْمُرْ بِالمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ المُنْكَرِ |
| • الحَرْفُ | • المُخْتَصُّ بِالأَفْعَالِ<br>• المُخْتَصُّ بِالأَسْمَاءِ<br>• المُخْتَصُّ بِالأَسْمَاءِ | ، أَلَمْ تَعْلَمْ بِأَنَّ اللهَ يَرَى / لَنْ تَنَالُوا البِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا ...<br>، رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً ... |